SOCIAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part-III
Paper-V
By- Dr. Ramendra Kumar Singh.
H.O.D
Deptt. of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

LABORATORY EXPERIMENTAL METHOD IN SOCIAL-PSYCHOLOGY

सामाजमनोविज्ञान, सामाजिक अन्तःक्रिया का विज्ञान है। इसके अन्तर्गत सामाजिक समस्याओं अथवा घटनाओं एवं सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन करने के लिए कई प्रकार की विधियों का सहारा लिया जाता है। इनमें प्रयोगशाला प्रयोगविधि को विशेष महत्व प्राप्त है। सामान्यतः नियंत्रित परिस्थिति में क्रमबद्ध रूप से व्यक्ति के सामाजिक क्रियाओं का किया गया अध्ययन ही प्रयोग कहलाता है। इस विधि में अध्ययनकर्ता निरीक्षण विधि की तरह वास्तविक वातावरण में स्वतः घटित घटनाओं एवं व्यक्ति के व्यवहारों को घटित होने की प्रतीक्षा नहीं करता, बल्कि प्रयोगशाला में ही कुछ उस तरह की व्यवस्था करता है जिससे वाँछित व्यवहार उत्पन्न हो जाये। अर्थात इस विधि में प्रयोग द्वारा सूचनाएँ प्राप्त किये जाते हैं। प्रयोगशाला की नियंत्रित परिस्थिति में घटित व्यवहार का निरीक्षण करके निष्कर्ष निकाला जाता है। इसीलिए इस विधि से प्राप्त निष्कर्ष की वैधता एवं विश्वसनीयता बढ़ जाता है।

इसे परिभाषित करते हुए चैपलिन ने कहा है:-
"Experiment is a series of observations carried out under controlled conditions for the purpose of testing a hypothesis." अर्थात प्रयोग निरीक्षण की एक शृंखला है जो किसी परिकल्पना की जाँच के लिये नियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है।"

समाज मनोविज्ञान के अन्तर्गत व्यक्ति की सामाजिक व्यवहारों के अध्ययन के लिए दो प्रकार की प्रयोगात्मक विधियों को उपयोग में लाया जाता है:-

(1) प्रयोगशाला पर आधारित प्रयोग (Laboratory experiment)
(2) क्षेत्र प्रयोग (Field Experiment)

प्रश्न की माँग के अनुसार यहाँ हमें Laboratory Experiment method की व्याख्या करनी है। अब प्रश्न उठता है कि आखिर प्रयोगशाला पर आधारित प्रयोग है क्या? इस संदर्भ में मनोवैज्ञानिकों ने कई ढंग से इसे स्पष्ट करने का प्रयास किया है। फेस्टिंगर ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है:-

"प्रयोगशाला प्रयोग एक ऐसा प्रयोग है जिसमें अनुसंधानकर्ता अपनी इच्छा से वास्तविक परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है जिसके लिए कुछ परिवर्त्यों को नियंत्रित करता है तथा दूसरे परिवर्त्यों को परिचालित करता है ताकि आश्रित परिवर्त्यों पर पड़नेवाले प्रभावों को मापा जा सके।"

इसी तरह प्रमुख वैज्ञानिक Kerlinger ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है:-

"प्रयोगशाला पर आधारित प्रयोग एक ऐसा वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें लगभग उन सभी स्वतंत्र चरों का न्युनीकरण कर दिया जाता है जो अनुसंधान की तात्कालिक समस्या के प्रसंग में नहीं होते हैं।"

उक्त प्रकार उपर्युक्त दोनों परिभाषाओं

विश्लेषण करने पर Laboratory Experiment Method के स्वरुप स्पष्ट हो जाते हैं तथा निम्नलिखित विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं :-

(1) इस विधि में सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन करते समय अध्ययन विषय पर ~~पड़ने वाले प्रभावों को~~ अपने प्रभाव डालने वाले अन्य परिस्थितियों को नियंत्रित कर लिया जाता है।

(2) अध्ययनकर्ता अपनी इच्छा एवं सुविधानुसार Independent Variables को Manipulate करने में सफल हो जाता है।

(3) इसमें प्रयोगकर्ता कारण से कार्य की तरफ बढ़ता है। यानि स्वतंत्र-चर का प्रभाव आश्रित-चर पर मापने में सफल हो जाता है

'स्वतंत्र चर (कारण तत्व) ⟶ आश्रित चर (कार्य तत्व)

(4) इस विधि से परिकल्पना की जाँच स्वीकृत अथवा अस्वीकृत के रुप में करना संभव हो जाता है।

(5) इस विधि से निष्कर्ष की परिशुद्धता या यथार्थता अधिक होती है।

प्रयोगशाला आधारित प्रयोग विधि के गुण :-

प्रयोगशाला आधारित प्रयोग विधि की अपनी कुछ विशेषताएँ अथवा गुण हैं जिनके बदौलत उसे अन्य विधियों की तुलना में श्रेष्ठ समझा जाता है। इसकी प्रमुख गुण निम्नवत् हैं :-

① नियंत्रण :- इस विधि की मूल विशेषता नियंत्रण है। सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन पूर्णतः नियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है। परिणाम को प्रभावित करनेवाले चरों को प्रयोगशाला में नियंत्रित कर लिया जाता है। यह गुण समाज मनोविज्ञान की अन्य विधियों में नहीं पाई जाती है।

② परिचालन (Manipulation) :- इस विधि की एक दूसरा महत्वपूर्ण गुण यह है कि इसमें प्रयोगकर्ता अपनी आवश्यकतानुसार

किसी एक Variable का Manipulation कर सकता है, क्योंकि अध्ययन की परिस्थिति पर अध्ययनकर्ता का पूर्णतः नियंत्रण होता है। इसलिए प्रयोगकर्ता को किसी चर को परिचालित करने की सुविधा होती है।

(3) उन्नत उपकरणों एवं यंत्रों का प्रयोग:- इस विधि से व्यक्ति की सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन करने के लिए उन्नत एवं विकसित उपकरणों को प्रयोग में लाया जाता है। उससे व्यवहारों का सूक्ष्मतम अध्ययन संभव हो पाता है।

(4) यथार्थता (Precision) इस विधि में यथार्थता या परिशुद्धता का गुण पाया जाता है। प्रयोग की परिस्थिति पर नियंत्रण होने के कारण Error Variance (अशुद्धि विचलन) कम होती है। दूसरी तरफ इसमें परिशुद्धता एवं निश्चितता अधिक पाई जाती है। यह गुण अन्य विधियों में नहीं पाई जाती है।

(5) पृथक्कीकरण (Isolation) समाज मनोविज्ञान की यह एक ऐसी विधि है जिसमें Isolation के गुण पाये जाते हैं। इसका अर्थ यह है कि प्रयोगकर्ता अध्ययन की जानेवाले Independent Variable को अन्य उनसे मिले-जुले चरों से अलग कर सकता है तथा अध्ययन किये जाने वाले Variable के प्रभाव को देख सकता है। Kerlinger के अनुसार "Experiment method का यह गुण इसे अन्य विधियों से श्रेष्ठ बना देता है।

(6) पुनरावृत्ति (Repetation) प्रयोगशाला प्रयोग की यह एक महत्वपूर्ण गुण है। इसमें प्रयोगात्मक अध्ययन को कई बार दुहरा कर जाँचा जा सकता है। इस तरह बार-बार प्रयोग करके परिणाम की वैधता को जाँचना संभव है। इससे परिणामों की स्थिरता एवं सत्यता की जाँच हो जाती है। यह सुविधा अन्य विधियों में नहीं होती है।

(7) प्रमाणीकरण (Varification) इस विधि की एक महत्वपूर्ण गुण यह है कि इसमें प्राप्त निष्कर्षों की जाँच दूसरे अध्ययनकर्ता भी कर सकते हैं। इसलिए प्राप्त निष्कर्ष प्रमाणिक होता है।

(8) विश्वसनीयता :- प्रयोगशाला प्रयोग से प्राप्त परिणाम विश्वसनीय होता है, क्योंकि उससे प्राप्त परिणामों की जाँच बार-बार विभिन्न व्यक्तियों द्वारा की जा सकती है। इसके नियंत्रण के गुण उसकी Reliability के गुण को बढ़ा देते हैं। यह सुविधा दूसरी विधियों में नहीं पाई जाती है।

(9) वैधता :- इस विधि से प्राप्त निष्कर्ष की Validity उच्च कोटि की होती है। उसे अन्य प्रभावित करनेवाले चरों पर नियंत्रण करना संभव है। इसलिए इसकी Isolation एवं Reliability के गुण इसके निष्कर्ष को वैधता (Validity) प्रदान कर देते हैं।

सीमाएँ अथवा दोष :- उपर्युक्त गुणों के बावजूद यह विधि पूर्णतः दोषरहित नहीं है। इसकी कुछ सीमाएँ हैं जो निम्नलिखित हैं :-

(1) अस्वाभाविक वातावरण में किया गया अध्ययन :- इस विधि से व्यक्ति की गई सामाजिक व्यवहारों या क्रियाकलापों का अध्ययन नियंत्रित परिस्थिति में की जाती है। ऐसी हालत में प्रयोज्य के व्यवहारों में कृत्रिमता के दोष आ जाते हैं। क्योंकि उसके व्यवहारों पर कृत्रिम वातावरण के प्रभाव आ जाते हैं। इसलिए प्राप्त निष्कर्ष की विश्वसनीयता संदिग्ध हो जाती है।

(2) लचीलापन का अभाव :- इस विधि में Flexibility का अभाव होता है क्योंकि एक प्रयोगशाला प्रयोग में प्रयोगात्मक परिस्थिति कठोर होता है। प्रयोगकर्ता अपनी तरफ से बहुत कुछ परिवर्तित नहीं कर पाता है। उसके हाथ प्रयोग के मानकों से बँधे होते हैं।

(3) प्रयोज्य के चुनाव में कठिनाई :- इस प्रकार के प्रयोग के लिए सह उचित प्रयोज्य का चुनाव बड़ा ही कठिन कार्य होता है। प्रयोज्य से शोधकर्ता को वातावरण बनाना

कठिन हो जाता है। इसमें प्रयोज्य की सहयोगिता एवं संवेदनशीलता आदि के अभाव के कारण यह एक दुरूह कार्य हो जाता है।

(4) वास्तविकता का अभाव :- अध्ययन की परिस्थिति अस्वाभाविक एवं बनावटी होती है, जिसके कारण स्वाभाविक वातावरण एवं स्वाभाविक व्यवहार नहीं बन पाता है। इसलिए इसमे नैसर्गिकता की कमी आना स्वाभाविक हो जाता है।

(5) जटिल सामाजिक व्यवहारों के अध्ययन के लिए अनुपयुक्त :- समाज मनोविज्ञान की दृष्टिकोण से इस विधि से मानव की जटिल व्यवहारों का अध्ययन संभव नहीं है। कामुक व्यवहार आदि का अध्ययन इस विधि से करना कठिन है। Kerlinger के अनुसार- समूह गतिकी, तथा पारस्परिक क्रिया आदि समस्याओं का अध्ययन इस विधि से करना सफल नहीं है।"

(6) सीमित क्षेत्र :- इस विधि का एक अन्य महत्वपूर्ण दोष यह है कि इसका क्षेत्र सीमित है; सभी सामाजिक समस्याओं एवं घटनाओं का अध्ययन प्रयोगशाला में नहीं किया जा सकता है। क्योंकि सभी सामाजिक परिस्थितियों को प्रयोगशाला में घटित करना तथा उसे नियंत्रित करना संभव नहीं है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि है कि प्रयोगशाला प्रयोग विधि की भी अपनी कुछ सीमाएँ हैं। यह पूर्णतः दोषरहित विधि नहीं है। इन सीमाओं के बावजूद समाज मनोविज्ञान की अन्य विधियों की तुलना में इसकी बड़ा निकता, विश्वसनीयता एवं वैधता अधिक है। इसके साथ क्षेत्र विधि एवं निरीक्षण विधि का प्रयोग, ~~सहायक विधि के रूप में आवश्यकतानुसार किया जाना चाहिए~~ आवश्यकतानुसार किया जाना चाहिए। अतः वर्तमान परिस्थिति में समाज मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण विधि अवश्य माना जाना चाहिए।

[signature]